

बाति कपूर सुधार, दीपक-ज्योति सुहावनी ।
 भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजों सदा ॥
 ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि. स्वाहा ।
 अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगन्धता ।
 भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजों सदा ॥
 ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि. स्वाहा ।
 फल की जाति अपार, घान-नयन-मन-मोहने ।
 भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजों सदा ॥
 ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि. स्वाहा ।
 आठों दरब सँवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसों ।
 भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजों सदा ॥
 ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

अंग-अर्घ्य

(सोरठा)

पीड़ें दुष्ट अनेक, बाँध मार बहुविधि करें ।
 धरिये छिमा विवेक, कोप न कीजै पीतमा ॥
 उत्तम छिमा गहो रे भाई, इह-भव जस, पर भव सुखदाई ।
 गाली सुनि मन खेद न आनो, गुन को औगुन कहै अयानो ॥
 कहि है अयानो वस्तु छिनै, बाँध मार बहुविधि करें ।
 घर तैं निकारै तन विदारै, वैर जो न तहाँ धरै ॥
 ते करम पूरब किये खोटे, सहै क्यों नहिं जीयरा ।
 अति क्रोध-अगनि बुझाय प्राणी, साम्य-जल ले सीयरा ॥
 ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमार्धमाङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
 मान महाविषरूप, करहि नीच-गति जगत में ।
 कोमल सुधा अनूप, सुख पावै प्राणी सदा ॥
 उत्तम मार्दव गुन मन-माना, मान करन को कौन ठिकाना ।
 बस्यो निगोद माहिं तैं आया, दमरी रूँकन भाग बिकाया ॥